SRI AUROBINDO GHOSE

NATIONALISM

Aurobindo ghose (1872 से 1950) भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नैतिक बौद्धिक एवं आकस्मिक शक्तियों का भारतीय जनमानस पर गंभीर प्रभाव पड़ा। रोम्मा रोलाँ ने Aurobindo ghose को भारतीय विचारकों का सम्राट एवं एशिया तथा यूरोप का समन्वय कहकर पुकारा है। अरविन्द घोष को श्रद्धावश श्री अरविन्दो के नाम से भी जाना जाता है। श्री अरविन्दो एक महान राष्ट्रवादी, मानवतावादी, दार्शनिक, ऋषि एवं अध्यात्म विद्या के ज्ञाता थे। राष्ट्रीय आंदोलन को आध्यात्मिक महत्व देने एवं उनके सामने पूर्ण स्वराज्य को प्रेरणा प्रद करने, स्वतंत्रता के आदेश की प्राप्ति के लिये एक राजनीतिक योजना तैयार करने, भारत के विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा की तेज में नवजीवन अनुप्राणित करने तथा सारे आंदोलन को अंतर्राष्ट्रीय एवं मानव एकता के आदेश को मुख्य प्रसंग में रखने का सर्वाधिक श्रेय श्री अरबिन्दो को है। डा० कर्ण सिंह ने उनके संबंध में कहा है – "Sri Aurobindo was firmly grounded in the grew out of his deep spiritual convictions politics for him were an extension as it were of his theory of personal, national and universal spiritual development."

श्री अरबिन्दो का लालन पालन एवं शिक्षा दिक्षा पाश्चात्य ढ़ंग से हुई। ये सिर्फ सात वर्ष की अल्पायु में ही इंग्लैंड चले गये जहाँ 21 वर्ष की आयु तक शिक्षा ग्रहण की। विदेश में रहने तथा पाश्चात्य ढ़ंग से शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद भारतीय संस्कृति के कुछ गंभीर तत्व उनके हृदय में काम करते रहे जो आगे चलकर राष्ट्रवाद (Nationalism) के महान संदेश वाहक तथा भारतीय अध्यात्मवाद के महानतम पुजारी सिद्ध हुये। उन्होंने गीता एवं उपनिषद की गहन अध्ययन की तथा वे मैजिनी, गैरीबाल्डी, रामकृष्ण परमहंस तथा स्वामी विवेकानन्द के विचारो से काफी प्रभावित थे।

1893 में जब श्री अरबिन्दो भारत लौटे तो उस समय कांग्रेस में उदारपंथियों का प्रभुत्व था। दादा भाई नौरोजी, फीरोजशाह मेहता, सर सी० एन० बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले आदि उदारवादी नेता ने नामधारी तरीको से प्रार्थना, प्रस्ताव और प्रतिरोध की नीति (Policy of prayer, Petition and Protest) का अनुसरण कर अंग्रेजो से अधिक से अधिक सहायता करने की बात कही। लेकिन श्री अरबिन्दो ने भारत

Scanned with CamScanner

में आने के पश्चात् सर्वप्रथम Baroda नरेश के यहाँ नौकरी कर ली, उसके बाद 1905 तक विभिन्न सेवाओं में रहते हुये पर्दे के पीछे से ही गुमनाम लेखों के द्वारा कांग्रेस तथा ब्रिटीश शासन के प्रति रचनात्मक आंदोलन करके देश वासियों में जागृति फैलायी और गुप्त संगठन के द्वारा सशस्त्र क्रांति का आधार बनाने में प्रयत्नशील रहे। वास्तव में कांग्रेस के उदारवादी नेताओं द्वारा की जा रही कार्यों का तिलक के साथ मिलकर इस बात पर जोर दिया कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का मूलतत्व भारतीय अध्यात्म एवं सांस्कृतिक परँपरा है।

1905 में बंगाल विभाजन के पश्चात् वे सक्रिय राजनीति में आये और उग्र राष्ट्रवाद का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में समर्थन किया। सिर्फ 5 वर्षों की सक्रिय राजनीति में भारतीय राजनीतिक रूपरेखा को बदल डाले। 1910 में जेल से लौटने के पश्चात् सक्रिय राजनीति से हटकर अध्यात्म का मार्ग अपना लिये तथा यह आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का प्रतिपादन किया लेकिन दोनो ही अवस्थाओं में परस्पर घनिष्ठ संबंध रहा। श्री अरबिन्दो की राष्ट्रवाद राजनीतिक चीख पुकार से दूर हटकर धार्मिक भावना से ओत प्रोत थी।

श्री अरबिन्दो का राष्ट्रवाद वस्तुतः हिन्दुवाद का पुनरूत्थान था। इसमें अतीत के प्रति गौरव तथा भारत के गौरव पूर्ण इतिहास की पुनरावृति करना था। वे भारतीय जनमानस पर राष्ट्रवाद की प्रवृति फैलाने के लिये अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान परिस्थिति के अनुसार ढ़ालने में विश्वास करते थे। उनके विचारानुसार प्राचीनता एवं आधुनिकता का सामन्वय आवश्यक है।

श्री अरबिन्दो ने भारत को भौगोलिक सत्ता और प्राकृतिक भूखण्ड न मानकर "एक माता" के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने भारतवासियों से अपील की कि उनकी माता विदेशी अत्याचारों की बेड़ियों से बंधी है, इसे मुक्त करो। भारत माता की मुक्ति के लिये देशवासियों से सभी प्रकार के कष्टो को सहने की मार्मिक अपील की। वास्तव में श्री अरबिन्दो का यह अपील भारतीय संस्कृति की उपज थी जिसे बंकिम चन्द्र चटर्जी ने और प्रचार किया। उनके इस मात्र कवि की कल्पना का सचमुच ही राष्ट्रीयता की भावना के विकास में महान योगदान रहा।

श्री अरबिन्दो के अनुसार राष्ट्र की मुक्ति का प्रयत्न एक परम पवित्र यज्ञ है जिसमें बहिष्कार, स्वदेशी राष्ट्रीय शिक्षा और अन्य कार्य छोटी बड़ी आहूति है। इस यज्ञ

Scanned with CamScanner

की सफलता ही भारत की स्वतंत्रता है। इस यज्ञ की सफलता में किसी प्रकार की कमी के कारण हमारे कदम लड़खड़ाते हैं। यदि किसी शंका के कारण हमारी आस्था डगमगाती है तो माता संतुष्ट नहीं रहेगी और हमें प्रत्यक्ष दर्शन नहीं देगी।

श्री अरबिन्दो ने भारत वासियों को माता की बेड़ियों से मुक्ति कराने में यह भी चेतावनी दी कि यदि हम अपना यूरोपीयकरण करेंगे तो हम अपनी आध्यात्मिक क्षमता, अपना बौद्धिक बल और आगे पुनरुत्थान की शक्ति को सदा के लिये खो बैठेंगे। श्री अरबिन्दो ने भारतीय जनता के मन में यह बात बैठा दी कि राष्ट्रवाद दैवी शक्ति का प्रतीक है तथा आत्मा के शाश्वत शक्ति का निवास है, इसे प्राप्त कर लेने पर हमें सामाजिक दृढ़ता, बौद्धिक महत्ता, राजनीतिक स्वतंत्रता, विश्व पर प्रभावकारिता सब कुछ स्वतः ही प्राप्त हो जाता है।

श्री अरबिन्दो ने राष्ट्रवाद की दैवीय स्वरूप की झाँकी के माध्यम से भारतीय जनता में यह विश्वास भी दिया, राष्ट्रवाद केवल राजनीतिकरण नहीं है, वह तो एक धर्म है जो ईश्वर से उद्भूत है तथा जिसे लेकर सभी को जीवित रहना है। उनके अनुसार राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रवाद की भावना को दबाया नहीं जा सकता क्योंकि यह ईश्वरीय शक्ति की सहायता से निरंतर बढ़ती रहती है। राष्ट्रवाद अमर है तो यह कोई मानवीय वस्तु नहीं बल्कि साक्षात ईश्वर है और ईश्वर को न तो मारा जा सकता है और न ही जेल भेजा जा सकता है।

श्री अरबिन्दो ने राष्ट्रवाद की इस दैवीय स्वरूप की झांकी के माध्यम से भारतीय जनता में यह विश्वास भर दिया कि कोई भी सांसारिक बाधा एवं भौतिक शक्ति उनके भारत माता की स्वतंत्रता के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। उन्होंने कहा कि एकता में महान् शक्ति है। यदि भारत के सभी पुत्र मिलकर मातृभूमि की पुकार पर दौड़ पड़ेंगे तो एकता साकार होगी और भारत माता की बेड़ियाँ टूट जायेगी।

अरबिन्द का विचार था कि भारतीय राष्ट्रीयता में किसी भी वर्ग के लोगों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये। उनके विचारानुसार भारत को स्वतंत्र कराने हेतु हिन्दू, मुसलमान, दुकानदार, कलाकार, किसान आदि सभी को भारतीय राष्ट्रीयता की भावना में लाना होगा। जैसे कि उन्होंने 'बन्दे मातरम्' में लिखा है — In the ideal nationalism which India will set before the world there will be an essential

P.T.O.

quality between man and man, between caste and caste, between class and class."

अरबिन्द राष्ट्रवाद के संबंध में आर्थिक तर्कों को भी स्वीकार करते हैं। उन्होंने अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से जनता के बीच ब्रिटीश साम्राज्यवाद के बारे में बतलाया। उनके अनुसार विदेशी पूँजीपतियों ने भारत में जो विभिन्न औद्योगिक संस्थान लगाये हैं और जो धन स्थापित किया है लगाया है उससे केवल समृद्धि का भ्रम उत्पन्न हुआ है। भारत के लघु उद्योग नष्ट हो गये थे और भारत पर मुक्त व्यापार की नीति को बलपूर्वक थोप दिया गया था। इस प्रकार अरबिन्दो ने राष्ट्रवाद की व्याख्या के समय आर्थिक कारकों का भी वर्णन किया है।

श्री अरबिन्दो का विचार था कि मानव जाति के अध्यात्मिक जागरण में भारत को अनिवार्य भूमिका निभानी है। इसे समस्त भूखण्ड को दिव्य संदेश देना है जो पूर्ण स्वतंत्रता से ही संभव है। भारत की स्वतंत्रता सम्पूर्ण मानव जाति के हित में है क्योंकि स्वतंत्र भारत ही राष्ट्रीय गुरू के रूप में अपनी पूर्व निश्चित अध्यात्मिक भूमिका निभा सकता है।

श्री अरबिन्दो का राष्ट्रवाद संकुचित नहीं था, उन्होंने भारत के स्वतंत्रता एवं जागरण पर इसलिये जोर दिया क्योंकि उनको विश्वास था कि भारत का कार्य विश्व कार्य एवं ईश्वर कार्य है। अरबिन्द का कहना है कि भारत शक्तिशाली एवं आक्रामक शक्ति बनने के लिये प्रयत्नशील नहीं है, बल्कि अपने विशाल अध्यात्मिक खजाने को संसार को प्रदान कर मानवता को समानता एवं एकता के सूत्र में गुँथने के लिये प्रयत्नशील है। उनका अंतिम उद्देश्य एक विश्व राज्य की स्थापना है, जिसमें स्वतंत्र राष्ट्रों का एक संघ होगा, जिसके अंदर हर प्रकार की पराधीनता, बल पर आधारित असमानता और दासता का विशेष विलोप होगा। इसमें कुछ राष्ट्रों का स्वभाविक प्रभाव दूसरों से अधिक हो सकता है किन्तु सबकी परिस्थिति समान होगी।

आलोचना → श्री अरबिन्दो के राष्ट्रवाद की आलोचना कुछ लोगों के द्वारा की गई है। इन लोगों के द्वारा अरविंद की भाषा और विचार अत्यंत विशिष्ट और दुरूहतापूर्ण है जो भारत जैसे देशों के साधारण जनता की समझ से परे है। इसी तरह यह राष्ट्रवाद संकीर्ण हिन्दू राष्ट्रवाद है। उन्होंने राष्ट्रवाद के नाम पर हिंदुत्व को प्रश्रय दिया है। श्री अरबिन्दो का राष्ट्रवाद

Scanned with CamScanner

उग्र राष्ट्रवाद है जो वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित न होकर बुद्धि भावना और अध्यात्म पर आधारित है। इसी तरह अरविन्द द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद ऐसे समय पर दिया गया जबकि वह नितान्त अव्यवहारिक और असाध्य माना जाता था।

उपर्युक्त आलोचनाओं के संदर्भ में हम यह कह सकते हैं कि यह सत्य है कि श्री अरविन्दो का राष्ट्रवाद अल्प काल सक्रिय राजनीति से अलग आध्यात्मिक वाद में चले जाने के कारण यह अवश्य ही साधारण जनता की समझ से बाहर हो गई है तथा यह गांधी, तिलक, गोखले आदि की तरह प्रसिद्धि न पा सके। फिर भी उन्हें हिन्दूवादी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे राष्ट्रवाद में सभी वर्गों, धर्मों के लोगों को शामिल होने का आह्वान किया था। यह सत्य है कि उन्होंने गीता और उपनिषद का गहन अध्ययन किया था और उनपर इनका गहरा प्रभाव भी था। अरविन्दो घोष का विचार मौलिक था। वे राष्ट्र की मुक्ति द्वारा विश्व राष्ट्र संघ की स्थापना करना चाहते थे।

As a nation building → (एक राष्ट्र निर्माता के रूप में)

श्री अरविन्दो पाश्चात्य ढंग से लालन पालन एवं शिक्षा दिक्षा प्राप्त करने के बावजूद अपने देश के सांस्कृतिक परम्परा और गौरव को नहीं भूले थे। वे लगभग ७ वर्षों से 21 वर्षों तक इंग्लैंड में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने भारत को स्वतंत्र करने एवं इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वे एक ऐसे भारत राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे जो स्वार्थहीन, स्वतंत्र एवं प्राचीन तथा वर्तमान का समन्वय हो।

No need

वे ब्रिटेन से लौटने के बाद भारतीय संस्कृति के अनुरूप भारत को माता के रूप में प्रस्तुत कर इसकी मूर्ति का आह्वान किया। वे भारतीय को अपनी सांस्कृतिक परंपरा की याद दिलाई तथा कहा कि एक ऐसे भारत का निर्माण हम कर सकते हैं जो पूर्ण स्वतंत्र होकर पूरे विश्व के मानव के लिये एक दिव्य संदेश प्रस्तुत कर सकता है। वे अपने भारत का निर्माण प्राचीन संस्कृति के तहत ही करना चाहते थे। उन्होंने पाँडिचेरी निवास के दौरान अध्यात्म के द्वारा भारत को पूरे विश्व का आकर्षण केन्द्र बना दिया।

CONCLUSION → इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्री अरविन्दो ने भारत में अध्यात्मिक राष्ट्रवाद का बिगुल फूँका और

P.T.O.

Scanned with CamScanner

राष्ट्र के दैवी स्वरूप को प्रस्तुत कर भारतीय जनता की पौरुषता को ललकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नयी दिशा प्रदान की। श्री अरबिन्दो ने विदेशी शासन से पूर्ण मुक्ति के आदर्श का प्रतिपादन करके राष्ट्रीय आंदोलन को उत्तेजक, प्रेरणास्पद और क्रांतिकारी बनाया। उन्होंने राष्ट्र की एकता से आगे बढ़कर मानव की एकता की बात की तथा राष्ट्रवाद को अंतर्राष्ट्रीय वाद दृष्टिकोण प्रदान की एवं सामाजिक तथा राजनीतिक संरचना में नैतिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों को सम्मिश्रित किया।

—x—

Shashi Bhushan Kumar
PG Dept. of Pol. Science
R N College, Hajipur
9334481906

Scanned with CamScanner